Internal Assignment - 1 आंतरिक मूल्यांकन–1
MA (Final) Sanskrit. एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-05 गद्य तथा काव्य **Max. Marks : 20**

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–05 पूर्णांक : **20**

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आन्तरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र.1.(अ) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

''श्रुता भवद्भिरस्य विहंगमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे, स्वरे च मधुरता, प्रथमं तावदिदमेव महदाश्चर्यम्, यदयमसंकीर्णवर्णप्रविभागामभिव्यक्तमात्रानुस्वार–स्वरसंस्कारयोगां विशेषसंयुक्ताम् अतिपरिस्फुटाक्षरां गिरमुदीरयति। तत्र पुनरपरम्, अभिमतविषये तिरश्चोऽपि मनुजस्येव संस्कारवती बुद्धिपूर्वा प्रवृत्तिः। तथाहि–अनेन समुत्क्षिप्तदक्षिणचरणेनोच्चार्य जयशब्दमियमार्यामामुद्दिश्य परिस्फुटाक्षरं गीता। प्रायेण हि पक्षिणः पशवश्च भयाहार–मैथुन–निद्रा–संज्ञामात्र–वेदिनो भवन्ति। इदन्तु महच्चित्रम्।''

अथवा

सहसैव तस्मिन् महावने संत्रासितसकलवनचरः, सरभसमुत्पतत्पतत्रिपक्षपुटशब्दसन्ततः, भीतकरिपोत–चीत्कारपीवरः, प्रचलितलतावकुल–मत्तालिकुलक्वणितमांसलः, परिभ्रमदुद्घोणवन–वराह–रवघर्घरो, गिरिगुहासुप्त–प्रबुद्ध–सिंहनादोपबृंहितः, कम्पयन्निव तरून्, भगीरथावतार्यमाण–गंगाप्रवाहकलकल–बहलो भीतवनदेवताकर्णितो मृगयाकोलाहलध्वनिरुदचरत्। आकर्ण्य च तमहमश्रुतपूर्वमुपजातवेपथुरर्भकतया जर्ज्जरित–कर्णविवरो भयविह्वलः समीपवर्त्तिनः पितुः प्रतीकारबुद्ध्या जराशिथिलपक्षपुटान्तरमविशम्।

प्र.1.(ब) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

यावदर्थपदां वाचमेवादाय माधवः।
विरराम महीयांसः प्रकृत्या मितभाषिणः।।

अथवा

पदाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहिनस्तद्वरं रजः।।

प्र.2. ''बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्'' कथन की समीक्षा कीजिये। 7

अथवा

उद्धव द्वारा प्रस्तुत राजनीतिसम्मत विजिगीषु द्वारा शत्रुनिग्रह के उपाय बताइये।

प्र.3.(i) निम्नलिखित श्लोक का सप्रसंग अनुवाद कीजिये – 3

भुजप्रभादण्ड इवोर्ध्वगामी, स पातु वः कंसरिपोः कृपाणः।
यः पांचजन्य प्रतिबिम्बभंग्या, धाराम्भसः फेनमिव व्यनक्ति।।

अथवा

हेमाचलस्येव कृतः शिलाभिरुदारजाम्बूनदचारुदेहः।
अथाविरासात्सुभटस्त्रिलोकत्राणप्रवीणश्चुलुकाद्विधातुः।।

प्र.3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य संस्कृत–व्याख्या लेख्या – 3

श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः
चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटीपरिकरः।
अमंगल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि।।

अथवा

अधोलिखितेषु एकस्योपरि संस्कृते टिप्पणी लेख्या –

बिल्हणः / माघः / शिवमहिम्नस्तोत्रम्

Internal Assignment - 1 आंतरिक मूल्यांकन–2
MA (Final) Sanskrit. एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-05 गद्य तथा काव्य **Max. Marks : 20**
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–05 पूर्णांक रू20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आन्तरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र.1.(अ) निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 4

आलोक्य च सा दूरस्थितैव प्रचलितरत्नवलयेन रक्त–कुवलयदल–कोमलेन पाणिना जर्जरितमुख–भागां वेणुलतामादाय नरपतिप्रतिबोधनार्थं सकृत् सभाकुट्टिममाजघान, येन सकलमेव तद् राजकम् एकपदे वनकरियूथमिव तालशब्देन तेन युगपदावलितवदनमवनिपालमुखादाकृष्य चक्षुस्तदभिमुखमासीत्।

अथवा

अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन् मृगयाकलकले, निर्वृष्ट–मूक–जलधर–वृन्दानुकारिणि मथनावसानोपशान्तवारिणि सागर इव स्तिमिततामुपगते कानने, मन्दीभूतभयोऽहमुपजातकुतूहलः पितुरुत्सगांदीषदिव निष्क्रम्य कोटरस्थ एव शिरोधरां प्रसार्य सन्त्रास–तरल–तारकः शैशवात् किमिदमित्युपजातदिदृक्षस्तामेव दिशं चक्षुः प्राहिणवम्।

प्र.1.(ब) निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 3

स्वशक्त्युपचये केचित्परस्य व्यसनेऽपरे।
यानमाहुस्तदासीनं त्वामुत्थापयति द्वयम्।।

अथवा

बृहत्सहायः कार्यान्तं क्षोदीयानपि गच्छति।
सम्भूयाम्भोधिमभ्येति महानद्या नगापगा।।

प्र.2. कादम्बरी कथामुख के आधार पर जाबालि–आश्रम का वर्णन कीजिये। 7

अथवा

''माघे सन्ति त्रयो गुणाः'' कथन की व्याख्या कीजिये।

प्र.3.(i) निम्नलिखित श्लोक का सप्रसंग अनुवाद कीजिये – 3

कर्णामृतं सूक्तिरसं विमुच्य, दोषे प्रयत्नः सुमहान् खलानाम्।
निरीक्षते केलिवनं प्रविश्य, क्रमेलकः कण्टकजालमेव।।

अथवा

शौर्योष्मणा स्विभकरस्य यस्य, संख्येषु खंगः प्रतिपक्षकालः।
पुरन्दर प्रेरितपुण्यवृष्टि, परागसंगान्मिबिडत्वमाप।।

प्र.3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य संस्कृत–व्याख्या लेख्या – 3

प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः।।

अथवा

अधोलिखितेषु एकस्योपरि संस्कृते टिप्पणी लेख्या –

बाणभट्टः/शिवस्वरूपम्/विक्रमांकदेवचरितम्

Internal Assignment - 1 आंतरिक मूल्यांकन–1
MA (Final) Sanskrit. एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-06 नाटक तथा नाट्यशास्त्र **Max. Marks : 20**

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–06 पूर्णांक रू20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आन्तरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – (उत्तमराचरितम्) 7

लक्ष्मणः –

अथेदं रक्षोभिः कनकहरिणच्छद्मविधिना, तथा वृत्तं पापैर्व्यथयति यथा क्षालितमपि।

जनस्थाने शून्ये विकलकरणैरार्यचरितै–रपि ग्रावा रोदित्यपि दलति वज्रस्य हृदयम्।।

अथवा

रामः – कोऽप्यस्मिन् क्षत्रियपोतके पौरुषातिरेकः!

दृष्टिस्तृणीकृतजगत्त्रयसत्त्वसारा धीरोद्धता नमयतीव गतिधरित्रीम्।

कौमारकेऽपि गिरिवद्गुरुतां दधानो, वीरो रसः किमयमित्युत दर्प एव।।

प्र.2. उत्तमरामचरितम् नाटक के आधार पर भवभूति के कथन ''एको रसः करुण एव'' की समीक्षा कीजिये। 7

अथवा

रत्नावली की कथा–वस्तु की समीक्षा कीजिये।

प्र.3.**(i)** निम्न पर टिप्पणी लिखिए – 3

''भरतमुनि का रस सिद्धान्त''

अथवा

''रंगमंडप''

प्र.3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य संस्कृत–व्याख्या लेख्या – (दशरूपकम्) 3

अवस्थानुकृतिर्नाट्यं रूपं दृश्यतयोच्यते।
रूपकं तत्समारोपात् दशधैव रसाश्रयम्।।

अथवा

मधुरोद्धतभेदेन तद् द्वयं द्विविधं पुनः।
लास्यताण्डवरूपेण नाटकाद्युपकारकम्।।

Internal Assignment - 1 आंतरिक मूल्यांकन–2
MA (Final) Sanskrit. एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-06 नाटक तथा नाट्यशास्त्र **Max. Marks : 20**

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–06 पूर्णांक रू20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आन्तरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र.1. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – (उत्तमराचरितम्) 7

रामः – कष्टं भोः ! कष्टम् !
दलति हृदयं शोकोद्वेगाद् द्विधा तु न भिद्यते।
वहति विकलः कायो मोहं न मुंचति चेतनाम्,
ज्वलयति तनूमन्तर्दाहः करोति न भस्मसात्,
प्रहरति विधिर्मर्मच्छेदी न कृन्तति जीवितम्।।

अथवा

एको रसः करुण एव निमित्तभेदा–
द्भिन्नः पृथक्पृथगिवाश्रयते विवर्तान्।
आवर्तबुद्बुद्तरंगमयान्विकारा–
नम्भो यथा सलिलमेव हि तत्समस्तम्।।

प्र.2. उत्तमरामचरितम् नाटक की विशेषताओं का निरूपण कीजिये। 7

अथवा

रत्नावली नाटक के नायक का चरित्र चित्रण कीजिये।

प्र.3.(i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए – 3

''पुनश्च भावान्वक्ष्यामि स्थायिसंचारिसत्त्वजान्''

अथवा

''रस तथा भावों का सम्बन्ध''

प्र.3.(ii) अधोलिखितस्य श्लोकस्य संस्कृत–व्याख्या लेख्या – (दशरूपकम्) 3

रूपवितर्कवद्वाक्यं सोत्कर्षं स्यादुदाहृतिः।
क्रमः संचिन्त्यमानाप्तिः भावज्ञानमथापरे।।

अथवा

विभावैरनुभावैश्च सात्त्विकैर्व्यभिचारिभिः।
आनीयमानः स्वाद्यत्वं स्थायी भावो रसः स्मृतः।।

Internal Assignment - 1 आंतरिक मूल्यांकन–1

MA (Final) Sanskrit. एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-07 साहित्य–शास्त्र **Max. Marks : 20**

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–07 पूर्णांक रू20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आन्तरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र.1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 7

(अ) काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये।
सद्यः परनिर्वृत्तये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे।।

अथवा

(ब) यथा परार्थद्वारेण वाक्यार्थः सम्प्रतीयते।
वाच्यार्थपूर्विका तद्वत् प्रतिपत्तस्य वस्तुनः।।

प्र.2. काव्य प्रकाश के आधार पर आर्थी व्यंजना का भेदों एवं उदाहरण सहित निरूपण कीजिये। 7

अथवा

काव्य प्रकाश में निरूपित मुख्य वाक्य दोषों का निरूपण कीजिये।

प्र.3.(i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिये – 3

अर्थदोषाः (काव्यप्रकाश)

अथवा

''ध्वनिरात्मा काव्यस्य''

प्र.3.(ii) ध्वन्यालोकस्य अधोलिखितस्य श्लोकस्य संस्कृतव्याख्या लेख्या – 3

प्रतीयमानं पुनरन्यदेव वस्त्वस्ति वाणीषु महाकवीनाम्।
यत्तत्प्रसिद्धावयवातिरिक्तं विभाति लावण्यमिवांगनासु।।

अथवा

''ध्वनिभेदाः'' विषयमधिकृत्य संस्कृते टिप्पणी लेख्या।

Internal Assignment - 1 आंतरिक मूल्यांकन–2
MA (Final) Sanskrit. एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-07 साहित्य–शास्त्र **Max. Marks : 20**

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–07 पूर्णांक रू20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आन्तरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र.1. निम्नलिखित में से किन्हीं दो की सप्रसंग व्याख्या कीजिये – 7

(अ) मुख्यार्थबाधे तद्योगे रूढितोऽथ प्रयोजनात्।
अन्योऽर्थो लक्ष्यते यत् सा लक्षणारोपिता क्रिया।।

अथवा

(ब) काव्यस्यात्मा स एवार्थस्तथा चादिकवेः पुरा।
क्रौंचद्वन्द्ववियोगोत्थः शोकः श्लोकत्वमागतः।।

प्र.2. काव्य प्रकाश के आधार पर काव्य के प्रयोजनों की सविस्तार विवेचना कीजिये। 7

अथवा

काव्य प्रकाश में निरूपित गुणों एवं अलंकारों में भेद समझाइये।

प्र.3.(i) निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिये – 3

गुणीभूत व्यंग्य (काव्यप्रकाश)

अथवा

ध्वन्यालोकः

प्र.3.(ii) ध्वन्यालोकस्य अधोलिखितस्य श्लोकस्य संस्कृतव्याख्या लेख्या – 3

काव्यास्यात्मा ध्वनिरिति बुधैर्यः सम्मानातपूर्व–
स्तस्याभावं जगदुरपरे भाक्तमाहुस्तमन्ये।
केचिद् वाचां स्थितमविषये तत्त्वमूचुस्तदीयं
तेन ब्रूमः सहृदयमनःप्रीतये तत्स्वरूपम्।।

अथवा

''अर्थशक्त्युद्भवध्वनिः'' विषयमधिकृत्य संस्कृते टिप्पणी लेख्या।

Internal Assignment - 1 आंतरिक मूल्यांकन–1
MA (Final) Sanskrit.एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-08 आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास **Max. Marks : 20**

पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–08 पूर्णांक रू20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आन्तरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र.1. बीसवीं शताब्दी के प्रमुख संस्कृत गीतिकाव्यकारों का निरुपण करते हुए उनके गीतिकाव्यों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिये। **7**

अथवा

आधुनिक संस्कृत नाट्य साहित्य पर एक लेख लिखिये।

प्र.2. आधुनिक संस्कृत साहित्य के निबन्धों का परिचय दीजिये। 7

अथवा

आधुनिक संस्कृत साहित्य के यात्रावृत्तों का परिचय दीजिये।

प्र.3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिये। 3+3

(एका टिप्पणी अनिवार्यतः संस्कृते लेख्या)

(i) भट्टमथुरानाथशास्त्री

(ii) राधावल्लभत्रिपाठी

(iii) हरिराम–आचार्यः

(iv) सत्यव्रतसिंहः

(v) श्रीधरभास्करवर्णेकरः

Internal Assignment - 1 आंतरिक मूल्यांकन–2
MA (Final) Sanskrit. एम.ए. (उत्तरार्द्ध) संस्कृत

Course Code : MASA-08	आधुनिक संस्कृत साहित्य	**Max. Marks : 20**
पाठ्यक्रम कोड : एम.ए.एस.ए.–08	का इतिहास	पूर्णांक रू20

टिप्पणी :– सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रश्न संख्या 1 व 2 जो प्रत्येक 7 अंक के हैं, में आन्तरिक चयन की सुविधा है, इनके उत्तर देने की शब्द सीमा लगभग 500 शब्द हैं। प्रश्न संख्या 3 में लघूत्तरात्मक (शब्द सीमा 150 शब्द) प्रश्नों में से निर्देशानुसार दो प्रश्नों के उत्तर देने हैं। ये प्रत्येक प्रश्न 3 अंक के हैं।

प्र.1. बीसवीं शताब्दी के संस्कृत लघुकाव्यों का विवरण प्रस्तुत कीजिये। 7

अथवा

आधुनिक संस्कृत उपन्यासों का परिचय दीजिये।

प्र.2. बीसवीं सदी में लिखित संस्कृत लघुकथाओं की समीक्षा कीजिये। 7

अथवा

आधुनिक संस्कृत साहित्य में जैन मनीषियों के योगदान पर एक निबन्ध लिखिये।

प्र.3. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिये। 3+3

(एका टिप्पणी अनिवार्यतः संस्कृते लेख्या)

(i) श्रीनिवासरथः

(ii) राजेन्द्रमिश्रः

(iii) जगन्नाथपाठकः

(iv) रसिकविहारीजोशी

(v) पण्डिताक्षमाराव